७१. जाओ मन मेहेर शरण

जाओ मन मेहेर शरण ॥धृ.॥
जाके सब धरत ध्यान ॥

काहे मन और भ्रमत ।
भवजलमें काहे डुबत ।
मेहेर ही सत्य जान ॥१॥

क्या चाहे समझे नाही ।
सबही है मेहेर माँही ।
ध्यावो नित मेहेर चरण ॥२॥

प्रीतीसे ध्यावो मेहेर ।
पाओगे उसकि मेहर ।
'मधुसूदन' नित्य सुमर ।
मेहेर है मेहेरबान ॥३॥

Scanned by CamScanner